

SF : पर्दे के पीछे

विवाह : एक समीक्षा

## मचा दिए गुरु

"मुझे ये नहीं समझ आता कि हर कोई यहाँ लीडर कैसे है !  
ZS Associates के एकजुट्टीव, एक इंटरव्यू के दौरान

## बोले तो ₹ 101

आप orkut पर हर दिन कितने घंटे देते हैं ?	
7.3 %	5 से ज्यादा
8.5 %	3-5 घंटे
17.7 %	1-3 घंटे
66.5 %	0-1 घंटे

(सर्वे : 7 हॉल्स, 196 फाइल्स इयर)

## पंजी dude



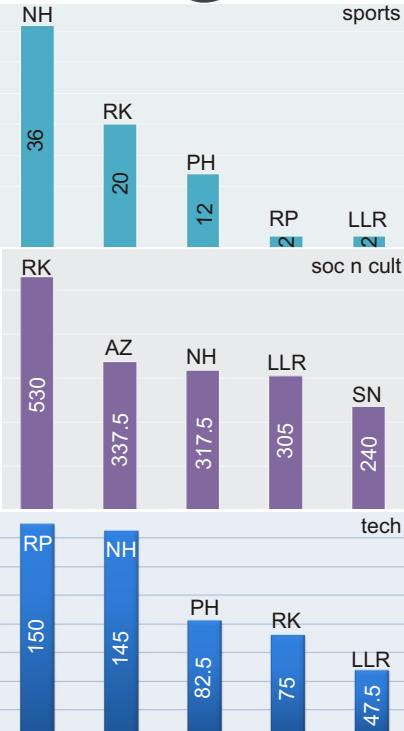
GG ही लेना था यार...



GC

मीटर

शीर्ष 5



## Computer City कण्डा कार्नरे

### कैम्पस में 'सेंध'

क्या आप जानते हैं कि हमारे कैम्पस में एक सुरंग है ? चौंक गए ? जी हाँ IIT खड़गपुर के कैम्पस में एक सुरंग है, जिसका एक सिरा यहाँ के ऊपर डैवलपमेंट सेंटर में खुला करता था और दूसरा सिरा पेटेल तथा नेहरू छात्रावास के बीच। इस सुरंग का प्रयोग द्वितीय विश्व युद्ध के समय सैनिकों के छुपने तथा भागने के लिए होता था।

## कंपनियों की बरसात : 2006-07

5 दिसम्बर 2006, और एक बार फिर शुरू हो गई T & P विभाग के सामने आग-दौड़। नौटिस बोर्ड पर टिकी आँखें, कुछ चमक से भरी, कुछ उदास। फाइनल इयर के विधार्थी जुटे हैं अपने "dream job" की तलाश में। कहीं सपने पूरे हो चुके और कहीं अभी भी प्रयास जारी है।

T&P विभाग के पास कम रुटाफ होने के बावजूद इतनी सारी कम्पनियों को बुलाया जाना साराहनीय है। प्राप्त आँकड़ों के अनुसार अब तक लगभग 70 % (B.Tech और Dual Degree मिलाकर) की प्लेसमेंट हो चुकी है और इस महीने के अन्त तक 90 % लोगों के प्लेस होने की उम्मीद है।

कम्पनियों का ब्यौरा- अब तक लगभग 77 कम्पनियाँ आ चुकी हैं और लगभग 658 लोग प्लेस हो चुके हैं। इस बार काफी कम्पनियों की चयन प्रक्रिया में फेर बदलाव देखने को मिले। बड़े पैकेज देने वाली कम्पनियों में देखा जाए तो Schlumberger ने अपनी चयन प्रक्रिया में काफी परिवर्तन किया है। इस कम्पनी ने अपनी चयन प्रक्रिया की धूरी से इंटर IIT को हटा दिया। बहराहल अब तक का सबसे बड़ा पैकेज भी Schlumberger ने ही दिया है। दूसरी तरफ ITC को देखा जाए तो इस कम्पनी ने अपना एक प्लाइंट सिस्टम दिया है। इस कम्पनी ने हर गतिविधि को

अलग से प्लाइंट सिस्टम दिये हैं और शॉर्टलिस्ट होने के लिए न्यूनतम प्लाइंट की सीमा निर्धारित कर दी गयी। इससे बोही लोग ITC के प्लाइंट सिस्टम को पार कर पाये जो बहुआयामी प्रतिभा के धूनी हैं।

जहाँ कुछ कम्पनियों की चयन प्रक्रिया काफी अनुशासित थी वहीं कुछ की चयन प्रक्रिया में लोगों ने काफी खामियाँ निकाली। बहुप्रतिष्ठित कम्पनी Lehman Brothers की चयन समिति में कुछ अनुभवहीन लोग आये थे जिन्हे साक्षात्कार का कुछ अनुभव नहीं था और उन्होंने अटपटे सवाल पूछे। Lehman ने दो पर्दों के लिए इंटरव्यू रखे थे। 6 लोग अपने फार्म में पद लिखना भूल गए पर उनमें से 4 लोगों का चयन किसी और पद के लिए कर लिया गया। उसी प्रकार Barclays ने भी अपने प्लेसमेंट से लोगों को अनियत किया और आखिर में Technology और Asia Pacific गृह्ण को ही शार्टलिस्ट किया।

HLL और मैकेनी को हमने पहले दिन रुलौट दिया और उन्होंने क्रमशः 2 व 1 लोगों का ही चयन किया जो कि काफी निराशाजनक है। ऐसी कम्पनियों को पहले 5 दिन में बुलाया जाना कितना सार्थक है? इसी प्रकार IBM जिसका पैकेज 3.5 लाख का था, को तीसरे दिन बुलाये जाने का व्याप्ति दिया है?

वहीं दूसरी तरफ Shell का कार्यक्रम बहुत ही अनुशासित था। उन्होंने अपना काम निर्धारित समय में पूरा किया जिससे T&P विभाग को काफी सहायता मिली।

इस बार कुछ नई कम्पनियाँ जैसे Barclays, Rio Tinto और Deloitte आर्यों और अच्छे पैकेज भी दिये जो आने वाले वर्ष के लिए अच्छा संकेत है। प्लेसमेंट के



एक साथ नहीं बुला सकते।

एक समस्या विभागीय कंपनियों के साथ यह है कि बाद के महीनों में अच्छी कम्पनियाँ नहीं आती क्योंकि अच्छे CG वाले लोग प्लेस हो चुके होते हैं। इन समस्याओं का निवारण करने के लिए प्रशासन प्रयत्नरत है और आने वाले वर्ष में इनका समाधान हो जाएगा।

निष्कर्ष यह है कि 30-31 दिनों में इनका अच्छा प्लेसमेंट होना अपने आप में एक उपलब्धि है। लगभग 32 कम्पनियों ने 8 लाख से अधिक का पैकेज दिया है जो पिछले साल की 8 कंपनियों की बुलना में 4 गुना है। उम्मीद है जिनकी प्लेसमेंट नहीं हुई उनकी प्लेसमेंट जल्दी ही हो जाएगी। हमारी शुभकामनाएँ!

## फिर चली है SF की हवा क्षितिज पर...

जैसे-जैसे क्षितिज और SF की तारीख नजदीक आ रही है तैसे-तैसे दीवारों पर पोस्टरों की संख्या बढ़ती जा रही है और साथ ही बढ़ता जा रहा है KGP की जनता का उत्साह। हर साल की तरह इस साल भी टीम क्षितिज और टीम SF कुछ नए तो कुछ जाँचे परखे Events के साथ मैदान में उतर रही है। रुटर नाइट्स, गेटर लेवर्कर्स तथा वर्कशॉप्स तो आकर्षण का केंद्र होते ही हैं, मगर कुछ Events ऐसे भी हैं जो Fests शुरू होने के पहले ही लोगों की जुबान पर हैं। इसका कारण चाहे इनके रचनात्मक नाम कह लीजिए(जैसे क्षितिज का नाम MELA!!!), उनकी चोमांचकता या फिर पुरानकार राशि, सच तो यह है कि न चाहते हुए भी इनकी आकर्षण हमें arena तक खींच ही लाता है।

इन Fests का थीम चुनने और उन्हें अमली जामा पहनाने में भी कम मेहनत और रचनात्मकता नहीं लगती। SF जहाँ इस बार भारतीय रेल पर सावार होकर 'जंगल' से बाहर निकल आया है, वहीं क्षितिज भी वेटिकन से हुनुमान-कूदू राइट कर मिट्टी के पिछली बार लोगों ने रोबोट्स को फुटबॉल खेलते देखा था,

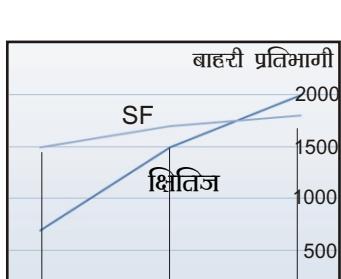
वहीं इस बार जनता मशीनी-मानव का बेसबॉल से इंतज़ार कर रही है। शंकर की धून के बाद जनता शान की आवाज पर झूमने को बेताब है।

अब बात करते हैं कुछ नए events की। क्षितिज के द्वारा शुरू किए जा रहे मुख्य नए events हैं:-

Chemical Howitzer- ये चुनीती है रसायनिक प्रक्रिया चालित कार बनाने की। Laws of Motion - यांत्रिक ऊर्जा का उपयोग कर एक जटिल पथ पर रोबोट को चलाने का सावाल है और इसकी पुरानकार चाहि है 16000 रु।

Tycoons- ये वर्तमान समय मूल्यों की जानकारी के आधार पर प्रतियोगियों द्वारा बनाए गए KPO(Knowledge Process Outsourcing) के नफे-नुकसान का निर्णय करती है।

इसके अलावा रोबोटिक्स भी अपने कुछ नए events के साथ तैयार है, जिसमें से लोड रनर जैसे कुछ ऐसे events हैं जिसमें फ्ल्यू भी बच्चेलर क्षितिज से उत्तराधीय प्रतियोगी भी भाग ले रहे हैं। नए Events हैं: लोड रनर, स्टेप व्हाइम्बर(यांत्रिक); रेल ट्रैक इंजीकर्ट, ग्रिड नेविगेटर(खायत); जिगर्स, मिशन मार्स(कोडिंग)।



(SF में) क्या करें, क्या ना करें...

1. Rough करने के लिए कॉपी-पन्नों पर पैसे बरबाद न करें, अन्यथा असंख्य नोटिसों का इस्तेमाल करें।
2. Star-Nites के लिए अधिक Euphoria न रखें, हो सकता है आपको तारे गिनकर रात गुज़ारना पड़े।
3. Comp पर कुछ अच्छी फिल्में डाउनलोड कर के रखें, TOAT में जगह न मिलने पर काम आ सकती है।
4. विपरीत-सेक्स का कोई पसंद आ जाए तो तुरंत बात करें, याद रखें अधूरे सपने दूटे हुए सपनों से अधिक खतरत हैं।
5. लैकिन SF के बाद जीवन में हरियाली हो ही जाएगी, इस भ्रम में भी न रहें। पतझड़ आते दें नहीं लगती।

# अपना लक्ष्य बनाए.....चेहरे पर एक संतोष भरी मुस्कान

इस बार “लीक से हटकर” मेरे आपका परिचय हम एक ऐसी हस्ती से कराने जा रहे हैं जिसने इंजीनियरिंग से अलग हटकर मनोरंजन की दुनिया में कॉर्पिर की तलाश की है। समीक्षा कोहली आई आई टी डिल्ली के अंत्युमनस हैं। वे रॉम्बस फिल्म्स की छत तले कई टी वी विज्ञापनों का निर्देशन भी कर चुके हैं। उनकी नई फिल्म “अल्पविद्यम” तीस करोड़ का मेगा प्रोजेक्ट है। पाँच II Tians के जीवन पर आधारित इस फिल्म में सलमान खान मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। उन्हीं से आपकी मुलाकात करा रहे हैं।

## लीक से हटकर

अपने बारे में कुछ बताएँ। आई आई टी आने का निर्णय कैसे हुआ?

मेरा जन्म एवं पालन-पोषण दिल्ली में हुआ। मैं वहाँ St. Xavier's मेरा पढ़ा था। इंजीनियरिंग करने का फैसला दूसरे विकल्पों की कमी और बायोलॉजी में रुचि ना होने से प्रेरित था। JEE क्लीयर करना आलान नहीं था लेकिन वहाँ बिताए चार साल जीवन के अच्छे अनुभवों में से थे। मैंने आई आई टी डिल्ली से 1993 में मेरेकोनिकल इंजीनियरिंग में बी टेक की।

अकैडमी और एक्साट्रा अकैडमी के क्षेत्र में आपकी II A लाइफ कैसी थी?

II A के जीवन मेरा वास्तविकता से परिचय कराया। आप अपने रुकून में सर्वश्रेष्ठ होते हैं, परन्तु यहाँ आप अन्य सर्वश्रेष्ठ छात्रों में से एक हो रहे हैं। किसी न किसी को दूसरों के टॉप करने के लिए चारता बनना पड़ता है। लेकिन अकैडमी के अलावा व्यास के बाहर का जीवन भी आपको एक



ही हुई थी।

आपकी सामान्य दिनचर्या क्या है?

कोई निश्चित दिनचर्या नहीं है। यह मेरे कार्य की सबसे अच्छी बात है। ये डॉयनामिक हैं। हर दिन एक नए दिन की तरह है। क्रेवल काम के हिसाब से ही नहीं, बल्कि जगह के हिसाब से भी। मैं अपने दिन की शुरूआत किसी कैफे से कर सकता हूँ, या अपने विस्तर पर या शहर से कहीं बाहर ... मुझे सिर्फ अपने काम पर ध्यान केंद्रित रखना पड़ता है। अभी मेरा ध्यान अपनी ऐड फिल्म्स करने एवं अल्पविद्यम के लिंकप्ट पर काम करना है।

आपको काम के लिए क्या प्रेरित करता है?

लीक से हटकर सोचना। मुझे ये पसंद है। वो अलग बात है। मैं अलग बनने की कोशिश करनी चाहिए, लेकिन कुछ अलग बनने की प्रक्रिया अलग तरह से सोचने की कोशिश से शुरूआत होती है। ये मुझे रोज़ प्रोत्साहित करती है।

“कुछ अलग बनाने के लिए सोचने कि प्रक्रिया अलग बनाने के लिए अलग तरह से सोचने की कोशिश से शुरू होती है।”

देखा। उसे पूरा करने के बाद की कहानी है... संघर्ष! अभी भी मंजिल मुझसे दूर है। उम्मीद है 'अल्पविद्यम' शायद मुझे वहाँ पहुँचा दे।

आपके लिए एक इंजीनियरिंग जैसा सुरक्षित कॉर्पिर छोड़ना कितना मुश्किल था?

इतना मुश्किल नहीं था। मैंने ना ही MBA की, ना ही मैं लिविंग लर्सिसेज में जाना चाहता था, ना ही उच्च शिक्षा, तो मेरे लिए परिवर्तन क्रेवल पहले विकल्प से नीडिया तक था। आज जब मैं पीछे देखता हूँ तो मुझे समझ में आता है कि ये छात्रांग लगाना बहुत ही बहादुरी का काम होता है। खासकर मेरी पत्नी के लिए, क्योंकि जब मैंने यह निर्णय लिया था तब मेरे वैवाहिक जीवन की शुरूआत

मीडिया में इतनी दूर आकर आपको कैसा महसूस हो रहा है? मेरा संघर्ष अभी खत्म नहीं हुआ है।

आप अपने II A के सहपाठियों की तुलना में अपने करियर को कहा पाते हैं?

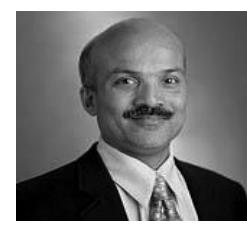
मैं जो कर रहा हूँ उससे खुशा हूँ। मानसिक संतुष्टि है परन्तु आर्थिक सुरक्षा का अभाव है। अगर आप अकेले हैं तब तो कोई बात नहीं लेकिन अगर आपका मेरे जैसा परिवार है तब बहुत मुश्किल होती है। परन्तु विश्वास ही ऐसा विज्ञान है जो कभी बदल नहीं सकता। आज जब मैं अल्पविद्यम के लिए बहुत से गिरियां हूँ तो मुझे लगता...

शेष पृष्ठ 4 पर

## हमें Communication Skills का महत्व समझना होगा

II A खड़गपुर के कई अंत्युमनस बाहर जाकर विज्ञान एवं तकनीक की दुनिया में भारतीयों की प्रतिभा का लोहा मनवा रहे हैं। ऐसे ही एक बिरले II A हैं - श्री मुरली रामनाथन। ये फार्मा एवं क्लिनिकल रिसर्च में 43 रिसर्च पेपर प्रकाशित कर चुके हैं। उनके मल्टीपल रक्लारोसिस पर किये गये रिसर्च कार्य को दुनिया भर में सराहा जा रहा है। 1983 में कोमिकल इंजीनियरिंग से र्नातक करने के बाद चार वर्ष तक कोमिकल इंजर्स्ट्री में काम किया। उसके बाद कोमिकल इंजीनियरिंग में MS और फिर बायो-इंजीनियरिंग में PhD पूरी की। उन्हीं से की गयी गुप्ततागृह के कुछ अंश प्रस्तुत कर रहे हैं हीरेश गुप्ता।

समय के निवेशक शायद डॉ लाल सोंगा निवृत्त होने वाले थे। मैं दिया जाने वाला भाषण ही भूल गया और यूँ ही कुछ बोल कर चला आया। इसके अलावा एक बार फिल्म देखते समय किसी ने नेताजी में पटाखे चला दिए। उस समय सोकेटरी होने के नाते मैंने फिल्म रुकवा दी। किंतु उस गुरुसारी भीड़ का मुझे अकेले ही सामना करना पड़ा। लेकिन उसके बाद फिर वहाँ कभी पटाखे नहीं चले।



मैं विश्वविद्यालय में कार्य करता हूँ। अतः मुझे अपना लम्य तय करने में कुछ सुविधा है। मैं 25% समय अपने पढ़ाने में व्यतीय विस्तर में देता हूँ। मैं अपना अधिकांश समय विस्तर करने में, सहयोगियों एवं छात्रों से बात करने में, मैनुस्क्रिप्ट लिखने एवं शोध कार्य में लगता हूँ।

अपने परिवार, रुचियों के बारे में कुछ बतार्ये।

मैं विवाहित हूँ तथा मेरे निवास एवं आनन्द, दो छोटी बहनें हैं। खाली समय अध्ययन में व्यतीय करता हूँ।

यहाँ की शिक्षा अन्य विश्वविद्यालयों की तुलना में कैसी है? अत्यंत उच्च श्रेणी की।

क्या आप II A के सहपाठियों से अभी भी सम्पर्क में हैं? वे अभी क्या कर रहे हैं?

II A से निकलने के बाद कई सहपाठियों से सम्पर्क दूर गया था। इधर हम फिर से मिलने लगे हैं। मैं ईमेल के माध्यम से

विवियों से हर हफ्ते बात कर लेता हूँ। हमारे क्षेत्र काफी मिल्ना हो गये हैं। आश्चर्यजनक रूप से, हमारा क्रेवल एक ही मित्र रासायनिक इंजीनियरिंग से जुड़ा है। मेरे कुछ मित्र MBA करने के बाद मैंनेजमेंट में हैं, एक सामाजिक रूप से सक्रिय हैं।

नये II Tians को आप क्या सलाह देना चाहेंगे?

II Tians के रूप में हम तकनीकी रूप से काफी योग्य हैं, किंतु हमें अच्छे कम्यूनिकेशन टिक्कलस का महत्व समझना होगा। मैं आप सभी से बैठकर मौखिक एवं लेखन क्षमता विकसित करने का अनुरोध करना चाहूँगा। ये क्षमताएँ आपकी वैयक्तिक सफलता में काफी महत्वपूर्ण सिद्ध होने जा रही हैं।

आप किस हॉल एवं डिपार्टमेंट से थे?

मैं RP हॉल में था, और कोमिकल इंजीनियरिंग का छात्र था।

II A में आपका शैक्षिक जीवन एवं एक्साट्रा कॉर्टिकुलर जीवन कैसा रहा?

सब कुछ बहुत मरम्मत रहा। मैंने अपने विवियों के सहयोग से पढ़ाई में काफी अच्छा किया। हमलोग एक साथ पढ़ाई करते थे, लेकिन

“JEE की प्रतियोगिता, मौलिकता पर ज़ोर एवं कैम्पस जीवन की विविधता हमें काफी योग्य, अनुकूलनीय एवं आजीवन सीखते रहने की इच्छुक बना देती है।”

आपके विचार में पैशेवर जीवन में II Tians की सफलता में किसका योगदान सबसे अधिक है, यहाँ की शिक्षा, यहाँ प्रवेश लेने वालों की योग्यता अथवा यहाँ की कैम्पस लाइफ?

मेरे ख्याल से ये सभी कारक मिलजुल कर काम करते हैं। JEE की प्रतियोगिता, मौलिकता पर ज़ोर एवं कैम्पस जीवन की विविधता हमें काफी योग्य, अनुकूल एवं आजीवन सीखते रहने की इच्छुक बना देती है।

आपकी दिनचर्या क्या है?

काफी विशेष घटना जो आप हमारे साथ बांटना चाहेंगे।

उस समय तो ऐसी कई बारे हुई थीं। मुझे याद आता है कि उस

# COP से SUPERCOP तक

पूरा नाम ?  
श्रवण कुमार ज्ञा।

आप KGP में कब से हैं ?  
24 दिसंबर, 1975 (कुछ ठहाकों के बाद) इस्यूटी पर 5-5-2000 से।

पहले यहाँ कर्या करते थे ?  
पिताजी यहीं पर Senior Security Officer थे। (गर्व से) Emg-9 (घर) मेरे पिताजी से होता हुआ 2035 तक मेरे पास है।

अपनी next generation को भी इसी पेशे में डालना चाहिएगे ?

नहीं मैं अपने बच्चे को एक IIITian के रूप में देखना चाहूँगा। कहीं आपका बच्चा यहाँ की चास लीलाओं में फँसा गया तो ? यहाँ के बच्चे बहुत समझदार हैं। एक IIITian के नजरिये से मैं यह पाता हूँ कि लाडकियाँ या तो पढ़ाई के लिए या फिर सेक्यूरिटी के लिए लड़कों को साथ रखती हैं।

आपकी शादी को कितने साल हुए ?  
यार तुम मेरी सारी GFs छुड़वाओगे... (थोड़ी देर हँसने के बाद) दो साल।

“लाडकियाँ या तो पढ़ाई के लिए या फिर सेक्यूरिटी के लिए लड़कों को साथ रखती हैं।”

सुना है आपको Glamour World काफ़ी ज़ंचता है ?  
बाकू आपसे क्या छिपाएँ। ड्रामा किया है (अशोक के रोल में Best Actor का अवार्ड)। राजपथ पर परेड और NCC में best shooter का अवार्ड भी मिला है।

Supercop का title कैसा लगता है ?

अच्छा, मुझे प्रेति करता है और IIIT के प्रति मेरी वफादारी और मेहनत के जज्जे को बता मिलता है।

खरता हाल security पर आप क्या कहना चाहेंगे ?

ये तो top level की बातें हैं पर मैं यह कहूँगा कि security को अलार्म करना भी security में आता है और यह छात्रों की भी जिम्मेदारी है।

आपकी पसंद नापसंद (फिल्में, खाना .....)?

अग्रिमाम, थोड़े और विवाह वाली simple लड़की। खाना भी simple माँ के हाथ का। हाँ एक चीज़ मुझे नापसंद लगती है, यहाँ होनेवाले suicide। (दुखी होते हुए) हम सब के होते हुए यह कैसे हो जाता है।

## फ्रूट कॉर्नर

इश्क के जाम को ऐसे न पियो,  
कि थोड़ा पिया और थोड़ा छोड़ दिया।

ये प्यार है, कोई VIM Bar नहीं,  
कि बस थोड़ा सा लगाया और हो गया।

मोटी किताब लगती है तकिया,  
देख कर नीद-सी आती है।

पर लिखी हुई है ऐसी क्यामत अंदर,  
नीद आती नहीं, उड़ जाती है।

काफ़ी है चुल्लू भर पानी झूँ मरने को,  
यहाँ मिल जाता है पूरा Shower। Watt लगा करती थी जब रक्कूर्में में थे  
कॉलेज में लग रही है Horse Power।

मैं हूँ नायाब KGPIan | 1st year में ही दाढ़ सुट्टा मारने लगा था। पढ़ाई नामक शब्द से मेल - जोल तो मम्मी का फोन आने पर ही होता था। दाढ़ सुट्टे में खर्च के बाद तो रीचार्ज के भी लाले पड़ जाते। दाढ़ सुट्टे में ही अपनी जिन्दगी रंगीन थी। एक शाम मेरे दोसरों

ने बताया पापा आए हुए हैं। मैंने सोचा वे मजाक कर रहे हैं। बिना बताए पापा कैसे आ सकते हैं। कमरे में पहुँचा तो पापा

किताबें वर्ही हैं। पापा मुझसे बोल गए, “मुझे घंटे भर का काम है।” मैं आता हूँ फिर तुम्हारे facad से मिलने जाऊँगा।” उस एक घंटे मैंने रुम की काया पलट दी। भगवान की तस्वीरें, सुगंधित अगरबत्तियाँ, किताबें से मेरा कमरा सुसज्जित हो गया। पापा आए तो कुछ संतुष्ट लगे। फिर हम facad से मिले। सोम की शुरुआत के बाद आज पहली बार facad को देखा। उन्हे भी कोई फच्चा याद

वैधानिक चेतावनी : इस कॉलम की सभी कहानियाँ पूर्णतः सत्य हैं। इसे हमारी कल्पना की उपज मानने की गलती ना करें।

को देख मेरी हालत मेरे कमरे से ज्यादा खबाब हो गई। मैंने कभी अपने कमरे की सफाई नहीं की थी। चारों तरफ मकड़ी के जाले, सुट्टे के अधजले टुकड़े, राख और उसकी सुगंध और मरत मरत अमिनेत्रियों की तस्वीर। पापा ने पूछा, “क्या यह कमरा दृग्धारा है ?” मैं क्या बोलता, झूँ बोल दिया, “मैं दूसरे के कमरे में पढ़ने गया था। मेरे दोसरों ने यह हालत कर दी है।” पापा ने फिर पूछा, “तेरी किताबें कहाँ गई ?” मैंने अपने भेज की ड्रॉवर खोला, वहाँ दाढ़ की बोतल पड़ी थी। मैं वर्षी खड़ा हो गया। मैंने बहाना बना दिया कि अपने दोस्त के रुम में पढ़ा हूँ, इसलिए सारी



कहाँ रहता है। पापा के सामने मेरी खूब बढ़ाई की। वहाँ तो मैं बच गया। पर डिपर्टमेंट से बाहर निकला ही था कि एक prof ने मुझे पहचान लिया। मुझसे पूछने लगे कि मैं उनके क्लास में क्यों नहीं आता। मैंने बहाना बना दिया कि सुबह मैं उठ नहीं पाता। Prof के बताने पर पता चला कि उनकी क्लास तो दोपहर में होती है। पापा के सामने उन्होंने मुझे बहुत डाँत। वहाँ से पापा को कमरे पर भेज मैं लैब चला गया। लैटरे वक्त एक दोस्त ने बताया कि पापा शायद चले गए हैं। उसने मुझे सुट्टा ऑफर किया। मैंने एक लंबी कश ली। धूँ पर को उड़ाते हुए मैंने सिर ऊपर किया। धूँ के गुब्बार के बीच में मुझे पापा बालकनी में खड़े दिखे, वे मेरी तरफ ही देख रहे थे।

## फट्ट्यों ने किया बयान, NCC कैम्प का ज्ञान

- ➊ उगते हुए सूरज का रंग लाल होता है।
- ➋ दस दिनों तक एक ही कपड़े पहनने से शरीर पर कीड़े नहीं पड़ते।
- ➌ पंछी, नदिया, पवन के झोंकों के साथ-साथ सुट्टा पीने वालों को भी कोई सरहद नहीं रोक सकती।
- ➍ मरगू नाम का प्राणी भी बिना मर्गे दस दिनों तक छिंदा रह सकता है।
- ➎ पारलो-जी दुनिया की सबसे ज्यादा बिकने वाला बिल्किट है।



## आवाज़

खुशी के साथ, हर कदम- आवाज़

## 42वीं Inter-IIT स्पोर्ट्स मीट का गुवाहाटी में सफल आयोजन

मनोरम पहाड़ों से घिरे, ब्रह्मपुत्र के किनारे बसा और तीन झीलों से सुसज्जित IIT गुवाहाटी में 13-20 दिसम्बर तक inter-IIT खेलकूद का आयोजन हुआ। पिछली बार की तरह IIT Kgp अपना वर्षत्व साबित न कर पाया और तीसरे स्थान के साथ ही Kgp को संतोष करना पड़ा। फुटबाल में Kgp को आसान पूल का फायदा तो मिला पर कुछ महत्वपूर्ण खिलाड़ियों के चौटिट होने के कारण रवर्ण चूक गया। वर्ही हाँकी में Kgp को काफी सार्टों की प्रतीछा के बाद रवर्ण प्राप्त हुआ। वॉलीबाल में शुरुआती ढीले प्रदर्शन के बाद Kgp ने अपना फार्म तापस पाया और रवर्ण प्राप्त किया। वेटलिफिटिंग में Kgp ने एक बार फिर रवर्ण प्राप्त किया। जहाँ एक तरफ लॉन टेनिस, टेबल टेनिस एवं बैडमिंटन के कोर्ट की प्रशंसा हुई वर्ही दूसरी ओर क्रिकेट एवं फुटबॉल फैल्ड्स की दशा काफी निराशाजनक थी। IIT Kgp की इस प्रतियोगिता में पदक सूची इस प्रकार है:

रवर्ण वेटलिफिटिंग, हाँकी, वॉलीबाल, टेबल टेनिस (महिला), तैराकी (महिला)

रजत फुटबाल, टेबल टेनिस (पुरुष)

काँच बार्केटबाल (पुरुष), तैराकी (पुरुष), बैडमिंटन (पुरुष एवं महिला)

### IITD में हिन्दी के बढ़ते कदम

अंगुली थाम हिन्दी की...

IIT दिल्ली के हिन्दी प्रकोष्ठ ने कुछ साराहनीय कदम उठाए हैं :

प्रत्येक लोकचर और रिसर्च पेपर का हिन्दी में संक्षेप अनिवार्य होगा

उन प्रोफेसरों को प्रोत्साहित किया जाएगा जो हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में पढ़ाना चाहते हों

विद्यार्थियों को हिन्दी में परीक्षा देने और रिसर्च पेपर लिखने की अनुमति प्रदान की जाएगी

चुनिन्दा पारद्य पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद होगा

उन संकारों को सहायता प्रदान की जाएगी जो हिन्दी में पुस्तक लिखना चाहते हैं

प्रशासनिक कर्मचारियों को हिन्दी सॉफ्टवेयर का उपयोग करने का प्रशिक्षण दिया जाएगा

### ... पृष्ठ एक का शोष

SF के नए events की बात करें तो MELA (म्यूजिक एन्टरटेनमेंट लिटरेचर आर्ट्स) का ज़िक्र तो हम पहले ही कर चुके हैं इसके अलावा इस साल से नाट्य-मंचन की प्रतियोगिता, रंगमंच भी शुरू हो रही है। यहाँ भी पुरस्कार राशि बढ़ा दी गई है और इसके अलावा PERPZ, Wildfire, और Wit-craft जैसे दर्शक-बटोरू events तो ही ही। आशा है कि इस बार ये दोनों Fest पिछले सभी संस्करणों से बेहतर साबित होंगे तथा हमें उत्सुक के रंगों से सराबोर कर देंगे।

### ...पृष्ठ दो का शोष

वे मुझे देखकर कहते होंगे “वाह इसने अपने सपने को पूरा किया।” इससे मनोबल ऊँचा होता है।

## विदेशियों के लिए आरक्षण की माँग

IITs ने मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय से 25% स्नातकोत्तर और 10% Faculty पदों के लिए, विदेशी उम्मीदवारों के आरक्षण की माँग की है। IITs के निर्देशकों का मानना है कि विभिन्न पृष्ठभूमि से आए लोग कैम्पस में अच्छे अध्ययन वातावरण बनाने में सहायक होंगे। अभी प्रत्येक IIT प्रति वर्ष तीन या चार विदेशी उम्मीदवारों को आकर्षित करता है।

## IITs में आरक्षण तीन चरणों में लागू होगा

IIT Kgp ने O.B.C.'s को 27% आरक्षण देने के प्रस्ताव को तीन चरणों में लागू करने का सुझाव दिया है। सामान्य वर्ग की सीटों की संख्या में कोई बदलाव न लाते हुए O.B.C.'s सीटों में 2007 में 9%, 2008 में 18% एवं 2009 में 27% की वृद्धि का प्रस्ताव है। 2006 में 2356 छात्र निए गए थे, जिसे 2009 तक बढ़ा कर 3769 करने का प्रस्ताव है। इसके लिए 500-800 नये शिक्षकों की व्यवस्था के साथ मूलभूत सुविधाओं पर होने वाले खर्च 1180 करोड़ अनुमानित किया गया है।

## नवीन सुविधाओं से सुसज्जित हुआ B.C.Roy अस्पताल

B.C.Roy अस्पताल में गत दिसम्बर को मेडिकल इमेजिंग, मेडिकल बायो ऐक्जोलॉजी, टेली मेडिसिन सहित छह नयी प्रयोगशालाओं का उद्घाटन हुआ। आशा है कि इस कदम से अस्पताल की दशा में सुधार होगा।

## कोलकाता में IIT

IIT Kgp का दूसरा कैम्पस कोलकाता में खुल रहा है। 250 करोड़ रुपये की लागत से 10 एकड़ में फैला राह कैम्पस न्यू टाउन चाजरहाट में स्थित होगा। दो हजार विद्यार्थियों की क्षमता वाले इस कैम्पस को बनाने में पाँच वर्ष लगेंगे। यहाँ रेगुलर B.Tech और M.Tech को छोड़कर अल्प अंतर्भुत और रिसर्च की व्यवस्था होगी।

## विनोद धाम का IIT Kgp में व्याख्यान

वर्तमान के technology era में शायद ही कोई ऐसा हो जो Pentium के नाम से अनभिज्ञ हो। Intel के Pentium processor ने कंप्यूटर युग की परिभाषा ही बदल दी। इसी Pentium Technology के जनक विनोद धाम कुछ दिनों पहले IIT Kgp में व्याख्यान देने के लिए आए हुए थे। Silicon valley में खुद की कंपनियों Nexgen और Silicon Spice को रसायित करने वाले विनोद धाम भारतीय मेधा के कायात हैं। उन्होंने बताया कि Intel को अपनी सार्व बनाए रखने के लिए नवीनतम technology की आवश्यकता थी और इन्होंने Pentium के रूप में न सिर्फ़ इस चुनौती को रवीकार किया बल्कि सफलता भी अर्जित की। उन्होंने युवाओं को और अधिक नए विचारों के साथ आगे आने के लिए कहा जिससे भारत में इंजीनियरिंग को बढ़ावा मिले। उन्होंने MBAपर प्रकाश डालते हुए कहा कि एक अच्छे मैनेजर्मेंट के लिए MBAकरना फायदेमंद तो है पर आवश्यक नहीं।

communication | ये दो तकनीकी कोर्सेज हैं, जिन्हें अच्छी तरह से पढ़ा जाए, ना की apprenticeship की तरह लिया जाए। फिर जरूरत है, On the Job training की जो कि IIT के सेमेस्टर की तरह कठिन होती है। IITians के लिए एक बात कह दें, दुनिया के साथ कदम मिलाकर चलना उतना कठिन नहीं है।

आपके IIT जीवन की कोई खास घटना जो आप हमारे साथ बांटना चाहेंगे।

मेरी फिल्म का परदे पर आने का इन्तजार करें।

IITians के लिए कोई संदेश।

पलक इपकरने से भी तेज गति से समय बदल रहा है। समय का पालन करें, अपनी ऊँज़ा का पुनः निर्माण करें और एक मौलिक तत्व को अपना लक्ष्य बनाएँ - चेहरे पर एक संतोष भरी मुरक्कान।

बहुत से लोग इंजीनियर नहीं बनना चाहते लेकिन परिस्थितिविश्व

IIT आ जाते हैं। यहाँ आकर उन्हें अपनी दूसरी क्षमताओं का एहसास होता है। उनके लिए अपकी क्या सलाह है?

वे मुझसे बात करें। मैं भी उनकी तरह ही हूँ। मैंने अपने सपने को पूरा किया। हालांकि मैं ये नहीं कहता कि ये आसान था लेकिन ऐसा नहीं है कि मैंने सिर्फ़ अपने अस्तित्व को बनाये रखा है, मैंने अपने जिंदगी को जिया भी है। मैंने उतार चढ़ाव देखे हैं और अब महसूस होता है इसने मुझे एक अच्छा आदमी बनाया है।

विजुअल मीडिया में किसी इंजीनियरिंग के छात्र को कैरियर की शुरुआत कैसे करनी चाहिए?

सबसे पहले एप्रीशियेशन कोर्स करना चाहिए। यहाँ आधारभूत चीज़ें सिखायी जाती हैं। और ये मुश्किल भी नहीं है। अगर किसी को सिनेमैटोग्राफ़ी या एडिटिंग के क्षेत्र में जाना हो तो FTI को फूल टाईम कोर्स कर सकते हैं या किसी इंस्टिट्यूट से mass

## रोशनी के साथ,

## हर कदम- आवाज़

लैखनऊ, नवलिनाएँ और नुर्हों पर आपके विचार आवाज़ित हैं

awaaz.iitkgp@gmail.com

## साक्षात्कार : राहुल रेड्डी, निदेशक, TIME

का होना इसी तथ्य को सत्यापित करता है।

उत्तर कुंजी के बारे में उन्होंने एक राय भी दी कि IIMs को परीक्षा समाप्त हो जाने पर उसी दिन answer key प्रकाशित कर देना चाहिए ताकि छात्रों में उत्तरों को लेकर भ्रम न रहे तथा वे अपना आकलन शीघ्र कर सकें।

## ||Tian CAT Aspirants हेतु संदेशः

सामान्यतः 'QA' और DI खंड ||Tians का अच्छा होता है अतः 'verbal ability' का टैनिक अभ्यास अनिवार्य है। यह बात और है कि अगर 'verbal ability' खंड non-scoring हो तो इन्हें फायदा होता है पर इसी पर निर्भर नहीं रहा जा सकता।

'QA' एवं 'DI' में गति बढ़ाने हेतु स्टैन्डर्ड तरीकों एवं फॉर्मूलों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। साथ ही अलग अलग तर्थों पर नए आईटी कल्स की ओर जाएं सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए।

एक और वर्ष, एक और घमासान। दिसम्बर को CAT के बाद ज्यादातर परीक्षार्थियों के मन में यही शंका थी कि अखिर 21वीं शताब्दी में CAT किस तरफ जा रहा है। भारत की सबसे प्रतिष्ठित परीक्षाओं में एक CAT का हाल के वर्षों में GMAT की तरफ बढ़ता कदम किसी से छुपा नहीं है। उदारीकरण और वैश्वीकरण के इस दौर में जब विश्व में सांस्कृतिक और पारम्परिक दृष्टियाँ कम हो रही हैं तब व्यापार जगत भी इससे अछूता नहीं है। आज वाणिज्य की जटिलता पश्चिमी और पूर्वी देशों के लिए अलग नहीं रह गई है। और शायद यही सबसे बड़ा कारण है कि इस क्षेत्र में सफलता की कुंजी भी सारे विश्व में एक समान है। CAT का प्रश्नपत्र भी यही इंगित करता है कि भारत में व्यापार जगत की जरूरतें विश्व अर्थव्यवस्था से अलग नहीं संबंधित हैं।

लेकिन ऐसा नहीं है कि विशेषज्ञों में CAT के इस रूपान्वयन को लेकर कोई समान मत है। बहुत लोगों का ऐसा मानना है कि CAT अपनी एक अलग ही

पद्धति पर चलता है जिसका मुख्य ध्येय हर वर्ष परीक्षार्थियों में से सर्वश्रेष्ठ का चुनाव ही होता है।

CAT हर वर्ष अपने को एक नए रूप में पेशकर छात्रों की मानसिक एवं व्यावहारिक क्षमता का परीक्षण करता है। GMAT की तरह CAT एक स्कोरिंग परीक्षा न होकर एक काफी कम स्कोर वाला प्रश्नपत्र होता है जिसमें सेक्सानल कटऑफ बहुत कम होते हैं।

विशेषज्ञों का मानना है कि पिछले दो तीन वर्षों में CAT के प्रश्न पत्र का ढाँचा GMAT की ओर जा रहा है जो निम्न बातों से विदित है-

- 1) दशक के शुरूआती वर्षों में आने वाले 150 प्रश्नों की जगह अब मात्र 75 प्रश्नों का प्रश्नपत्र।
- 2) GMAT की तरह ही CAT में इस बार 4 की जगह 5 विकल्पों का होना।
- 3) 'Verbal reasoning' और 'quantitative analysis' का स्तर GMAT की ही तरह होना।
- 4) 'GMAT' की तर्ज पर CAT में differential marking और निर्गतिव मार्किंग का बढ़ता चलन और महत्व।

## CAT 2006 : कहाँ हुई चूक छात्रों से

99 से ज्यादा होने के बावजूद अपेक्षित IIMs से कॉल नहीं पा सके। एक छात्र के तो 100 परस्सन्टाइल होने के बावजूद भी इसी कारणवश किसी भी आई.आई.एम. से कॉल नहीं आया।

खड़गपुर के छात्रों का वर्बल एबिलिटी में खराब प्रदर्शन क्यों?

यहाँ पर लोगों की Quantitative analysis और Data Interpretation में योग्यता तो बेहतरीन होती है। अलग अलग माईंट के लोग यहाँ जैर्स्ट यास करके आते हैं। जैर्स्ट में चुनाव का आधार सिर्फ गणित और विज्ञान ही होता है। पर यहाँ आने के बाद अंग्रेजी भाषा में सुधार के मौके बहुत कम मिलते हैं। प्रथम वर्ष में जो अंग्रेजी भाषा का एक विषय पढ़ाया जाता है उससे भी छात्रों को कुछ खास फायदा नहीं होता। क्लास में कोई डीबैट या गृहण डीसक्षण होता है तो उसमें भी कुछ ही छात्र भाग लेते हैं।

यहाँ जो साहित्यिक प्रतियोगिताएँ होती हैं उनमें भी यहाँ छात्र भाग लेते हैं जो अंग्रेजी भाषा में पूर्व से ही निपुण होते हैं। वर्बल एबिलिटी और कम्यूनिकेशन स्किल में समृच्छ सुधार का कोई भी प्रयत्न यहाँ कारबर नहीं दिख रहा। खड़गपुर में कैट की तैयारी करने वाले लोगों के लिए कॉर्चिंग इन्स्टीट्यूट के

विकल्प भी काफी कम हैं। और मुख्य शहर से दूरी के कारण यहाँ हमेशा श्रेष्ठ फैकल्टी उपलब्ध नहीं होते। इसके अतिरिक्त छात्रों में साहित्य के प्रति रुचि बेहद कम है।

सुधार के लिए कुछ उपाय :

यहाँ पर प्रथम वर्ष में कुछ ऐसे अनिवार्य कोर्स प्रारम्भ किए जाने चाहिए जिसमें छात्रों को अंग्रेजी भाषा पर अपनी पकड़ मजबूत बनाने का अवसर मिले।

लिटरेरी इवेंट्स में सभी को शामिल किए जाने की कोशिश की जानी चाहिए। इसमें अधिक से अधिक प्रथम वर्ष के छात्रों को मौका दिया जाना चाहिए।

कैट की तैयारी करने वाले छात्रों के लिए अपने इन्स्टीट्यूट के सहयोग से कुछ अच्छे कॉर्चिंग इन्स्टीट्यूट की भवित्व में अलग रूप से अंग्रेजी भाषा के लिए एक उत्कृष्ट व्यक्तित्व के विकास हेतु भी अंग्रेजी पर उचित पकड़ आवश्यक है। अतः इस दिशा में सामूहिक पहल किया जाना अत्यंत जरूरी है।

## पहला

समीक्षा करेगा। यह पहल कुछ दिनों में ही वार्तविकता की धरातल पर होगा।

कैम्पस की एक और समस्या विकास चालकों की मनमानी पर दीम आवाज ने रजिस्ट्रार और सुरक्षा पदाधिकारी से बात की।

उन्होंने बताया कि मार्च में होने वाली खड़गपुर नगरपालिका की मीटिंग में इसपर विचार किया जाएगा और जो भी परिणाम सामने आएगा

उसे हमारे सिविल विभाग को बता दिया जाएगा। फिर आगे की कार्यवाई सिविल विभाग करेगा। कैम्पस के महत्वपूर्ण रसायनों पर उचित कियाए का बोर्ड लगा दिया जाएगा।

पिछले दस वर्षों से कैम्पस में कोई रेस्टोरेंट नहीं खुला है। जबकि यहाँ की जनसंख्या कई गुण बढ़ गयी है। अपर्याप्त संख्या में रेस्टोरेंटों को देखते हुए टीम आवाज ने इस दिशा में एक और पहल की है, PAN लॉग में एक रेस्टोरेंट की खुलाने की। प्रशासन के सकारात्मक रूप से देखते हुए उमीद की जा सकती है कि यह भी जल्द संभव हो सकेगा।

अगर आप भी चाहते हैं कि किसी समस्या पर हो कार्यवाई तो लिख भेजिए हमें "Pahal" विषय से awaz.iitkgp@gmail.com पर। हम करेंगे आपकी ओर से पहल।



## बढ़ते कदम, बढ़लता वक्त

30 अक्टूबर को पहला अंक और फिर आनन्द-फानन में 15 नवम्बर को 12 पृष्ठों का दूसरा अंक निकालने के बाद आवाज टीम इस बात के प्रति आश्वस्त थी कि जनवरी में समय की समस्या नहीं होगी और हम बड़े आराम से ये अंक समय पर निकाल लेंगे। परन्तु संपादकों को पिछले दो अंकों में रह गयी खासी कमियों का मताना था। अतः हमने एक त्रुटिहित और संतुलित अंक निकालने का लक्ष्य तय किया। इसी लक्ष्य को साधने में एक सप्ताह का विलम्ब हो गया। आगे के अंकों में हमारी कौशिश रहेगी कि महीने की 15वीं की नियमित तारीख पर ही हम अंक प्रकाशित करें।

आवाज ने शुरू से इस सिद्धान्त को अपनाया है कि महज घटनाओं की रिपोर्टिंग पत्रकारिता नहीं। परदे के पीछे के सच को सामने लाना, समाज को उसकी बुराईयों के प्रति सचेत करना और उसे नयी दिशा में ले कर चलना उसके अहमकर्त्तव्य है। संपादकीय पृष्ठ पर तीन नये नियमित चर्च-नज़रिया, खरी खरी और डंक की चोट पर, इसी उद्देश्य से शुरू किये गए हैं। इन खंभों के जरिये एक बौद्धिक वातावरण तैयार करने का ध्येय है। 'विशेष' की शुरूआत हमने सिक्योरिटी के मुद्दे से की थी और हमें काफी अच्छी प्रतिक्रिया मिली-थी। ८। कर बात संपादक की सिक्योरिटी से जुड़े लोगों से। इस

निशाना बनाया है। सच का ऐसा दुर्भाग्य रहा है कि जब वो छिपा रहता है तो भी लोगों को अखरता है और जब सामने आ जाए तो लोगों की आँखों का काँटा बन जाता है। नोएडा के निशारी का दुखद कांड इसका चश्मदीद गवाह है- जब बच्चे गायब थे तो ये परेशानी का सबक था और जब लाशें निकली तो लोगों का दिल ढहल उठा। पर लाशों का दबे रहना ज्यादा धातक था। हमने अन्दरूनी धमासान के बाद कुछ की आँखों की किरकिरी बनना उचित समझा- सच की उम्र बढ़ाने के लिए। Career से जुड़े प्रश्नों पर भी इस अंक से हमने अपना ध्यान केन्द्रित किया है। शुरूआत CAT से की गयी है क्योंकि मामला गर्म है, और आगे के अंकों में हम भारतीय प्रशासनिक सेवा (UPSC) और GRE को अपने धोरे में लाएँगे।

पिछले अंक में हमने ग्रेड्स की कुर्बानी बचाने के लिए शुभकामनाएँ दी थीं। अधिकांश के ग्रेड्स तो बच गए पर सद्दाम न बच पाए। उनकी फांटी के साथ ही एक युग का अंत हुआ और निरंकुशता के एक नये युग की शुरूआत। नोएडा की घटना ने जहाँ जनमानस को झकझोट कर रख दिया वहीं न्यूज़ चैनलों को हॉस्ट चैनल में बदलते देत न लगी। इस दरमां खुशी की एक बात ये रही कि अभिषेक-ऐरवर्या अन्ततः settle हो गए। पर, एक प्रश्न है यहाँ कि जिस तरह बच्चन परिवार में सितारों की जमाल हो रही है, आसमाँ को इनके आगे झोली न फैलानी पड़े।

अगले अंक तक के लिए... अलविदा!

## संपादक के नाम

प्रिय आवाज़ जनता,

KGP culture में एक नया आयाम जोड़ने के लिए मेरी बधाई। एक content-based और informative outlook के पीछे की गई मेहनत दोनों ही अंकों में निखर के सामने आई है। साथ ही इसकी सारन भाषा ने इसे एक विस्तृत जनता से जोड़ा है। आने वाले अंकों में और भी बेहतर प्रदर्शन के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

आशीष काशीकर,  
नेहरू हॉल।

सर,

पहले तो मैं 'आवाज़' के लिए आपको बधाई देना चाहता हूँ। मैंने सेक्यूरिटी प्रबंध और उसके कर्तव्यों के बारे में आपका लेख पढ़ा है। यह पहली बार हुआ है कि इतनी जानकारी सेक्यूरिटी को छोड़, किंतु दूसरे के पास है। पर प्रश्न यह उठता है कि सेक्यूरिटी प्रबंध को और सार्थक बनाने के लिए प्रबंधन की तरफ कदम कौन बड़ायेगा।

मैं यह सुझाव देना चाहूँगा कि आपकी परिका में कैम्पस में होनेवाले गुनाहों (अपराधों) के बारे में एक खण्ड हो ताकि कैम्पस की जनता इनसे अभिज्ञ तथा सावधान रहे। और एक बात आपको पोता खोल जैसा कुछ शुरू करना चाहिए।

धन्यवाद,

गुणानंद झा  
पूर्व सेक्यूरिटी स्टाफ(SIS)  
(e-mail द्वारा)

मुख्य संपादक  
विवेक कुमार ठाकुर

पंकज कुमार सोनी

सुमित चिंचल

संपादक

चेतन गोयल

राहुल जैमिनी

आशुतोष कुमार

केतन कुमार

ज्ञान सिंहा

गौतम सिंह

तापस श्रीवास्तव

आकाश दीप

राहुल रंजन शिंशा

अभिनव प्रसाद

तुषार श्रीवास्तव

रितेश गुप्ता

सौरभ केसरी

कार्त्तन

सह-संपादक

प्रवीन कुमार निशा

विकास कुमार

पराग सौरभ

प्रभात शंकर

गौतम अनुराग

कृष्ण शिंह

नरेश कुमार सोनी

रितेश कुमार

अरुण शिंह

चंदन कुमार

अभिनव शेष्ठा

रिपोर्टर

हिमांशु अग्रवाल

अहमद अब्दुल्लाह

अभिता गुप्ता

तोषी प्रसाद

सैयद फराजी

अम्बाली पंजियार

Web/Design

देवाशीष घोष

शीलवी पंजियार

अविनाश कुमार

देवाशीष घोष

## टीम आवाज़

सुरेन्द्र केसरी

प्रवीन कुमार निशा

रितेश कुमार

सह-संपादक

प्रभात शंकर

चंदन कुमार

पराग सौरभ

हिमांशु अग्रवाल

अहमद अब्दुल्लाह

कृष्ण शिंह

Web/Design

सैयद फराजी

अरुण शिंह

टीम आवाज़

देवाशीष घोष

## गॉडगिरी की महान संस्कृति

इस संस्कृति की शुरूआत कब हुई विवादास्पद है। पर इसे पॉपुलराइज करने के श्रेय निस्संदेह भाई औसामा को जाता है। हाँ, औसामा बिन लादेन जिन्होंने मानवी सभ्यता को ये सिखाया कि काम करने के बाद उसका क्रेडिट लेना जरूरी है। बमविल्फोट करो, लोगों को दुखों से भर्ते इस संसार से मृत्युचिं दिलाओं पर ध्यान रहे, इस अतिधार्मिक काम का क्रेडिट कोई और न ले उड़े। क्या पता खुद भी कन्फ्यूजन में आकर कहीं र्स्वर्ग में virgins किसी और को अलॉट न कर दें। गौरतलब है कि जेहादियों की ये मान्यता है कि उनके धार्मिक काम के फलरूप र्स्वर्ग में उन्हें 21 कन्याएँ मिलेंगी। वैसे तकनीकी जमाना है, अल्लाह भी र्स्वर्ग के दूर्वासों को कष्ट देना लगता है।

भी क्या पड़ता है। कानों ने ये तक सुना कि फलां बाबू न होते तो इस साल का SF न होता, चिरौंजी लाल न होते तो इस साल का Inter-IIT ब्रौन्ज न आता और इस प्रकार 'God' का स्टेटस अमुक मियां के हाथ आ जाता है। सुनते सुनते वो खुद को मानने भी लगते हैं। हर किसी से बात करना उचित नहीं समझते, थोड़ा 'टिंर्ज' रहने लगते हैं। आखिर प्रोफाइल मेन्टेन करने का सवाल है भई।

'गॉड' के स्टेटस से पहले कि सीढ़ी है 'स्टड' बनने की। सालाहः महीने 'स्टड' कहलाने के बाद 'गॉड' का स्टेटस स्वयं मिल जाता है। बड़े अद्भुत किसीसे हैं स्टडगिरी के कोई SF, क्षितिज मेम्बर बनके स्टड कहलाता है तो कोई Inter-IIT की जर्जी से। 2.2 के चक्रकर लगाना और गिटार बजाना भी इसी सूची में आते हैं। बड़ा कन्फ्यूजिंग मामला है समझ ही नहीं आता कि स्टड चीज़ क्या है। अब एक जनाब हैं कि दिनरात शाब्द के नशों में धूत रहते हैं प्रतिक्रिया मिलती है 'स्टड' है भई। ऐसा लगता है कि 'स्टड' बांड खुद में वर्ग विशेष के लिए होगा।

प्रिश्व के कई क्षेत्र में जाहाँ भई औसामा की पूजा होती है। हमारे यहाँ के गॉड में कुछ खास गिनता नहीं है। दोनों ही 'गॉड ऑफ र्मॉल थिंग्स' हैं। और इन खुदाओं की अधिकता देखकर मालूम पड़ता है खुद ने जमीन पर उतरना क्यों छोड़ दिया। विश्व के कई क्षेत्र में जाहाँ भई औसामा की पूजा होती है। इन दोनों तरह के गॉड में कुछ खास गिनता नहीं है। दोनों ही 'गॉड ऑफ र्मॉल थिंग्स' हैं। और इन खुदाओं की अधिकता देखकर मालूम पड़ता है खुद ने जमीन पर उतरना क्यों छोड़ दिया। एक निश्चित वाले दस्त जूट जाते हैं। अगर यही आलम रहा तो विशेष अदालतों गठित करनी होंगी ये तय करने के लिए कि बम किसने फोड़ा है।

## प्यार और प्लॉसमेंट में सब जायज़ है

प्लॉसमेंट ने माहौल गर्म रखा है और चारों तरफ ट्रीट्स की बरसात हो रही है। इसी माहौल में कुछ ऐसी बार्टे हुई हैं जो समान अवसर के सिद्धांत पर प्रश्नचिन्ह लगाती हैं। कुछ फर्जी Inter-IIT कप्तान पकड़े गए तो कहीं बढ़ा-चढ़ा कर लिखने की सारी सीमाएँ लाँघ दी गई हैं। एक हॉल के तो सभी फाईल ईयर Inter Hall ड्राम्स में गोल्ड पाने का दावा करते नजर आए। लीडरशिप एबिलिटीज के तो इतने किसी गढ़े गढ़े कि एक कपनी के प्रतिनिधि को किसी लीडरशिप ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट में आये होने का भ्रम हो गया। काफी

सारे HCM के फर्जी सर्टिफिकेट्स जुगाइने की डंके की तरफ की उन्हें भी सुनाई दी। आलम ये था कि कुछ लोग

बिना खेल के मैदान में एक दिन एंट्री मारे गोल्ड विनिंग टीम के हिस्सा बन गए। बात ये थी कि किसने कितना ज्यादा

लिखा, बात ये है कि इस प्रकार प्रतिक्रिया जानकारी नहीं है कि किसने कितना ज्यादा

लिखा, बात ये है कि इस प्रकार प्रतिक्रिया जानकारी नहीं है कि किसने कितना ज्यादा

लिखा, बात ये है कि इस प्रकार प्रतिक्रिया जानकारी नहीं है कि किसने कितना ज्यादा

लिखा, बात ये है कि इस प्रकार प्रतिक्रिया जानकारी नहीं है कि किसने कितना ज्यादा

लिखा, बात ये है कि इस प्रकार प्रतिक्रिया जानकारी नहीं है कि किसने कितना ज्यादा

लिखा, बात ये है कि इस प्रकार प्रतिक्रिया जानकारी नहीं है कि किसने कितना ज्यादा

लिखा, बात ये है कि इस प्रकार प्रतिक्रिया जानकारी नहीं है कि किसने कितना ज्यादा

लिखा, बात ये है कि इस प्रकार प्रतिक्रिया जानकारी नहीं है कि किसने कितना ज्यादा

लिखा, बात ये है कि इस प्रकार प्रतिक्रिया जानकारी नहीं है कि किसने कितना ज्यादा

## Entrepreneurship : बात सबके बूते की

जग्नीनी सच्चाई

नारायणमृती, विनोद खोसला, सुहास पाटिल, विनोद गुप्ता.... ये नाम आपके मन में क्या हलचल पैदा करते हैं? कभी इनमें से एक बनने का खबाब देखा है? कभी माइक्रोसॉफ्ट और गूगल के सर्च इंजन या Pfizer के नवीनतम कैंसर ड्रग्स को टक्कर देने की सोची है? अगर ऐसा है तो entrepreneurship ही आपका रास्ता है, या कमसे कम E-Cell यही कहता है।

IIT की स्थापना ऐसे ही टेक्नोकैट और entrepreneur बनाने के लिए हुई थी जो देश के विकास के सापें देख सके और जिनमें उन सापों को साकार कर सकने का माद्दा हो। हमारा संरथान इस दिशा में आजकल काफी सक्रिय हो गया है। पिछले कुछ समय में e-cell ने जितना कुछ किया है वह वार्कइ प्रशंसनीय है। e-summit को सफल करना अतिशयोचित नहीं होगी कम से कम प्रतिभागियों की संख्या के हिसाब से। मगर प्रश्न है इस हो-हल्ले के औचित्य को समझने का। वर्तमान स्थिति में वित्तीय साक्षरता एक जरूरत है। पैसे के लिए काम करने से अच्छा क्या हो सकता है? पैसा आपके लिए काम करे। Entrepreneurship महज़ एक कैरियर विकल्प नहीं है, यह एक ज़ब्बा है, हमारी बौद्धिक एवं रचनात्मक क्षमता की अभियक्षित का साधन है। हमें इस चूहा-दौड़ से बाहर निकल कर अपने लिए नयी मौजिलें तलाशनी चाहिए। यही सही समय है अपने विचारों एवं अपनी रचनात्मक क्षमता को विकसित करने का, इस अवसर को हाथ से जाने ना दें।

खड़गपुर में अपनी कंपनी खोलना बाजार के लिहाज से काफी कम अवसर देता है। पर, इसके कुछ महत्वपूर्ण फायदे भी हैं। अपने कर्मचारियों की ट्रेनिंग के लिए यह उपयुक्त जगह है। अगर आपकी आँखें बंगल के बाजार पर हैं तो यह आपके लिए अपेक्षाकृत राजनीति मुक्ता क्षेत्र है।

**नज़रिया** फिर IIT का बांड भी

कंपनी को एक अलग पर्याप्त समय में जब बायोटेक्नोलॉजी पार्क और IIT-HRDI का सपना साकार हो चुका होगा, इसकी एक महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

प्रशासन की भूमिका

SRIC के जरिए, प्रशासन ने entrepreneurship गतिविधियों को काफी बढ़ावा दिया है। e-cell के संयोजक के मुताबिक, प्रो पी.पी. चक्रवर्ती और प्रो देवेश विश्वास की कोशिशें और अनुभव बहुत मददगार सहित हो रहे हैं। तब भी, STEP की मौजूदा हालत को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता। जरूरी है कि कंपनियों की शिकायतें सुनी जाएँ और उन पर कदम उठाया जाए। ऐसा न हुआ तो इसे चिराग तले अंदेरा ही कहा जाएगा।

KGP में सुविधाएँ

SRIC ही E-CELL को प्रयोजित करती है। छात्रों के लिए उचित वातावरण बनाना, चीजों को उनके लिए आसान करना, संक्षेप में

यही कार्य है SRIC के, छात्रों के संदर्भ में। इस कार्य को यह इन माध्यमों से पूरा करती है :

1 वाणिज्यिक दुनिया का छात्रों से मेलजौल बढ़ाना

2 छात्रों को प्राथमिक सहयोग

3 अच्छे विचारों को प्रोत्साहित करना एवं बढ़ावा देना

STEP

इसकी हालत काफी खराता चल रही है। इसमें कई कमियाँ हैं जिनके कारण वहाँ की कंपनियों में काफी असांतोष है। इनमें प्रमुख हैं :

1 सुरक्षा की समस्या। कुछ दिनों पहले एक कंपनी का लैपटॉप चोरी होने की शिकायत भी आई है।

2 शौचालय की बदबू। इसके कारण अगल बगल खड़े रहना भी मुश्किल हो जाता है।

3 इसका कियाया भी काफी अधिक बताया जाता है।

E-CELL और TIETS

इनके द्वारा किये जा रहे प्रयास वार्ताव में सराहनीय हैं। इन्होंने entrepreneurship को बढ़ावा देने के लिए एवं इसके प्रति जागरूकता फैलाने के लिए कई प्रयास किये हैं। इनके द्वारा कई कार्यशालाएँ आयोजित की गयी हैं, कई मान्य अतिथियों के व्याख्यान रखे गये हैं, व कई प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया है।

## Breadth व्यवस्था : एक औपचारिकता या जरूरत

Breadth व्यवस्था IIT के पाठ्यक्रम की कुछ पहचानों में से है। इस व्यवस्था के बारे में प्रशासन और छात्रों की राय जानने के लिए हमने डॉ. बी. एस. शास्त्री से और कुछ छात्रों से बात की।



Breadth व्यवस्था IIT के स्वर्ण यांती वर्ष 2000 में एक शैक्षिक सुधार के रूप में शुरू की गयी। इसे शुरू करने का एक ही उद्देश्य था छात्रों के लिए अवसरों का लिलार करना। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इसे तीन श्रेणियों में बांटा गया : IIT, IEM/HSS, और अंतरिमानीय विषय। पहली दो श्रेणियाँ छात्रों को वर्तमान परिस्थितियों के लिए professionally योग्य बनाती हैं। तीसरी श्रेणी का उद्देश्य भी बहुत कुछ ऐसा ही है। IIT में जितने विभाग हैं उतने शायद और कही नहीं। Breadth व्यवस्था छात्रों के सामने कई विकल्प खोल देती है जिनमें से तेरे पक्षी अपनी रुचि या professional चुनाव कर सकते हैं। Minor इसी विकल्प का एक पहलू है।

उदाहरण के तौर पर, किसी बायोटेक के बन्दे के लिए instrumentation में माइनर बहुत उपयोगी साबित हो सकता है। इस बार कई अन्य विषय भी इस तीसरी श्रेणी में शामिल किये गये हैं जिनमें RDC और CORAL के भी विषय हैं। ऐसा देखा गया है कि प्रायः छात्र Breadth चुनने में ग्रेड पर ज्यादा केन्द्रित रहते हैं। इसे देखते हुए इस बार theory और Lab को अलग कर दिया गया है। इससे सभी विषयों के मूल्य क्रेडिट के दृष्टिकोण से सामान हो जायेंगे। साथ ही lab के अलग हो जाने से ग्रेड भी सुधरेंगे। कुछ चुने विषयों में भीड़ रोकने के लिए अगली बार से breadth का बैंटवारा हो जाने के बाद छात्रों को बदलाव नहीं करने दिया जाएगा। जहाँ तक breadth को हर विभाग के हिसाब से सम्बद्ध विषयों तक सीमित रखने का सावल है तो यह व्यवहारिक नहीं है। कुल मिलाकर इस प्रणाली को हटाने का प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि यह एक प्रश्न गमी कदम मात्र होगा।



एक छात्र

एक rubber

प्रतिपक्ष

को एक oena, एक aero और technology का विषय पढ़ना पूरा करना ज्यादा उपयोगी होता है।

अधिकांश लोगों का यह मानना है कि Breadth प्रणाली अनिवार्य नहीं होनी चाहिए। इसका सबसे प्रबल तरफ उन छात्रों के संदर्भ में दिया जाता है जिनके ग्रेड अच्छे नहीं होते। उन्हें इच्छा के आधार पर नहीं बतिक कुछ खाली पड़े विकल्पों में तलाशना पड़ता है। बैहतर होगा कि मनोनुकूल विकल्प नहीं होने पर department electives लेने के विकल्प छात्रों के पास हो। Slots की समस्या भी अक्सर सामने आती है। और वैसे भी इसका कोई स्पष्ट तरफ नहीं दिखता कि क्यों एक Maths विभाग के छात्र को एक aero और

चाहिए। बनिस्कृत ज्यादा विभागीय courses को सकता है। जिन विभागों में ज्यादा कोर्स हैं वहाँ के छात्रों को अतिरिक्त विषय बोझ महसूस होते हैं।

यह एक ऐसी व्यवस्था है जो जग्नीनी तौर पर ऐचिलिक परिणाम देने में विफल रही है। किसी भी 3 अलग - अलग विभागों के तीन असंगत विषयों को पढ़ने से कोई professional फायदा नहीं होने वाला है। Breadth किसी विभाग के एक Breadth को सतही तौर पर पूरा कर पाता है जिससे भविष्य में कभी पाला पड़ने की संभावनाएँ कम होती हैं। सो भले ही वह कोर्स विशेष अच्छा हो, हमें उसका सम्पूर्ण ज्ञान नहीं मिल पाता। अधिकांश लोग ऐसे भी वैसे ही विषय चुनते हैं जिनमें अच्छे ग्रेड लग जायें। इस तरह से breadth व्यवस्था एक औपचारिकता मात्र बन कर रह गयी है। Breadth विषयों को सिर्फ सम्बद्ध विभागों तक सीमित कर देना ऐसे में एक आखिरी विकल्प है, अन्यथा breadth व्यवस्था एक

## पहल के साथ, हर कदम- आवाज़

आपके सुझाव और शिकायतें हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं। पहल के लिए ideas आमंत्रित हैं -





दीवारों पर लगे SF के अनगिन रंगीन पोस्टर  
ताल्लुक रखना चाहते हैं। पर इसके पीछे एक  
बेबाक खुलासा है आवाज़ की ये खास रपट।

## मामला लाखों का

बीते सालों और इस साल के अनुमानित बजट को देखें तो SF का वित्तीय आँकड़ा 30 लाख के आसापास रहता है। ये राशि इस नज़रिये से बहुत बड़ी है कि इसका एक अंश भी मरीनों के निए दार्ढ़-सुटा का खर्च निकाल सकती है। इस राशि का एक बड़ा हिस्सा कैश के रूप में आता है, मरीनलन alumni से और कंपनियों द्वारा दी गई छोटी राशियां, ये वो amount है जिसका कोई लेखा



जोखा नहीं होता। इसका अधिकांश हिस्सा टीम के खाने-पीने में चला जाता है और बाकी किसकी जैव में जाता है, कहना मुश्किल है। इस खर्च का आँकड़ा कई लाख तक पहुँचता है। कहाँ तो इतने बड़े फेस्ट में नुक़बद्द और literary events में प्रथम पुरस्कार की राशि मात्र 500/- होती है और इस राशि को बढ़ाये न जाने के पीछे पैसों की कमी की दलील दी जाती है। ये मामता भी हास्यरस्पद है कि जब प्रतिभागी पुरस्कार की राशि लेने आते हैं तो उन्हें धोषित राशि से भी कम दिया जाता है। ये भी गौरतलब है कि कंपनियों द्वारा फेस्ट के दौरान बाँटने के लिए दिए गए gifts और coupons भी लोगों तक नहीं पहुँच पाते। FP का आलम यह है कि Fine Frenzy के लिए दी गई राशि का निजी खर्च में इस्टेमाल को Heads उस राशि का उचित उपयोग समझते हैं क्योंकि उन्हें इस बात का यकीन होता है कि Prize-fixing की

बदलत KGP का शाषि तीन म स्थान मिल हैं जाएगा।  
वित्तीय मामलों में पारदर्शिता इतनी कम होने की मुख्य वजह ये है कि पैसे कहाँ से आए और कहाँ गए ये सिर्फ G Secs और उनके हॉल के Heads को पता होता है। RTI के इस दौर में आधिकारिक तौर पर चाशि घोषित किए जाने की बात तो दूर, खुद टीम के लोगों को बारह आने साच का पता नहीं होता। गौरतलब है कि इस साल चंजिस्ट्रेशन शुल्क बढ़ा कर 250 रु. कर दिया गया है। जो प्रतिभागी यहाँ आते हैं उनसे Acco के लिए 100 रु. Caution money टी जाती है जो कि गढ़दे,





है। क्या यह उचित नहीं कि SF टीम को अपना लक्ष्य पोलिटिकल मार्डलेज की जगह सिर्फ SF के आग्रेज़त तक सीमित रखना चाहिए?

Insti କେ ଗଦ୍ଦ

“इन तीन दिनों में हम Insti के राजा होते हैं। और बाकी समय जनता हमें राजा समझती है।” ये भ्रांति पाल रखी है SF के कुछ हैट्स ने। उनके हैट में यह बात पूछना लाजिनी भी है जिस तरीके से कुछ लोग उनसे यहाँ पेश आते हैं। हम निश्चित तौर पर उनके आभारी हैं कि दिन-रात की मेहनत साल भर करके वो इस फैट्टर का आयोजन करते हैं पर इसका अर्थ यह नहीं है कि वे अपने आप को निरंकुश राजा समझ बैठें। दुर्भाग्यवश kgp life का ये अहम सच बन गया है कि स्टड बनने का सबसे शार्टकट तरीका कोर्ट टीम मेम्बर होना है। हम इस विवाद में नहीं पड़ना चाहते हैं कि यहाँ कौन स्टड है, कौन नहीं। बात सिर्फ इतनी सी है कि कोर्ट टीम मेम्बर बनने का उद्देश्य SF का सफल आयोजन होना चाहिए।

दिए जाएँगे। यह गोरक्षणीया एक सुनियोजित तरीके से होता है। उस दौर में जब हमने सरकारों को खर्चों का पूरा व्यैचा सार्वजनिक करने पर मजबूर कर दिया है तो यह कहाँ तक वैध है कि हम अपने ही मामलों में ऐसी अपारदर्शी ल्यवरण्या कायाम रखें।

## Poltu का खमियाजा

काबिले जिक्र है कि इस साल MOOD-INDIGO (IIIT मुम्बई का फेस्ट) का बजट 75 लाख गया है। इस दृष्टिकोण से उन्होंने एक सफल फेस्ट के आयोजन में मिसालें कारायम की हैं। टीम मेमर्सी की मानें तो उससे बहतर स्तर का फेस्ट यहाँ भी हो सकता है। अगर SF को SF ही रहने दिया जाए उसे पोल्टबूज़ी का अखाड़ा न बनाया जाए।

इस पोल्टू की शुरूआत AP टीम के मेम्बर सेलेक्शन से होती है। 2<sup>nd</sup> yr ये सोचकर जाते हैं कि GD और इंटरव्यू में उनका प्रदर्शन न दंग लाएगा पर आगे चलकर उन्हें यह पता चलता है कि इसका निर्णय तो कहीं और होता है। Heads के सेलेक्शन में भी उनकी काबिलियत से ज्यादा अहम रोल उनके हॉल का होता है। इन सब का नतीजा ये है कि एक तो कई काबिल

बस हंगामा खड़ा करना हमारा सारी कोशिश है कि ये सूरत ब

लोग टीम में आने से बंधित रह जाते हैं तो कई नाकाबिल लोग टीम में जगह बना लेते हैं। इस व्यवस्था के फलस्वरूप कई

बस हंगामा खड़ा करना हमारा मकसद नहीं  
सारी कोशिश है कि ये सच्च बदलनी चाहिए



SF बोले तो Star Nights

KGP में पौरुषरों से पटी दीवारों को देखें तो SF में Fine Frenzy है। रंगमंच है, Wild Fire है, कवि सम्मेलन है, पर SF आयोजन के पीछे की मानसिकता के लिए SF तो बस Star nights है। हर साल पूरे बजट का अमूमन दो तिहाई हिस्सा सिर्फ Star Nights पर खर्च होता है। बाकी के हालात ये हैं कि SF के सभी लिटररी और नुक्कड़ प्रतियोगिताओं की पुरुषकार राशि से ज्यादा पुरुषकार राशि तो SFIH की निवृत्थ प्रतियोगिता में होती

के सभी लिटररी और नुक्कड़ प्रतियोगिताओं की पुस्तकार राशि से ज्यादा पुस्तकार राशि तो SFIH की निबंध प्रतियोगिता में होती है। यहाँ ये कावितेज़िक है कि बाहर के अधिकतर प्रतिभागी यहाँ इन्हीं में भाग लेने आते हैं। पर इन events के प्रति टीम के लापरवाह रूख से उन्हें निराशा ही हाथ लगती है। अधिकतर लिट और नुक्कड़ events के जज SF शुरू होने के एक दिन पहले तक निर्धारित नहीं होते हैं और

कुछ के जज तो उसी समय तय होते हैं। पौर्णवाश पिछले साल निटevents का दारोमदार उन्हें सौंप दिया गया जिन्हें इसका कोई अनुभव नहीं था। नतीजा ये हुआ है कि इन प्रतियोगिताओं का स्तर साल-दर-साल बिगड़ा जा रहा है। खुशी की बात है कि रंगमंच के नाम से एक नया event इस साल शुरू हो रहा है और उम्मीद है कि SF में नाट्य का स्तर सुधरेगा। SF के आकारों के इस बात पर गौर करना चाहिए कि पिछले साल का सबसे hi event कवि सम्मेलन रहा और इस साल अंतर्राष्ट्रीय (IIT कानपुर का फेस्ट) का सबसे सफल कार्यक्रम Panel Discussion रहा जिसमें अन्जा हजारे, अरुणा दायर सरीखी हस्तियाँ थीं। ये देखा गया है कि कई फर्हिनल ईयर SF के दौरान घर निकल लेते हैं क्य



∴ SF एक सामाजिक और सांख्यिक फेस्ट है। पर इसमें कई सांख्यिक और सांस्कृतिक प्रकार शामिल हो सकते हैं।

हवा के रूख से विपरीत हमारी इस चाल से जो लोग आहत हुए हैं उनसे यही गुजारिश है कि इसे दिल पर न लें और इस पर ठड़े दिमाग से सोचें। यह आलोचना प्रगति के लिए है, हंगामे के लिए नहीं।



है। कुछ को यह तसल्ली दी जाती है कि उनके पैसे डाक द्वारा भेज

## IIIT : वार्षिकीता के धरातल पर

ज्ञान प्रकाश एक मध्यम वर्गीय परिवार में जन्म लेता है और अपने नाम के गुरुविक पढ़नेलिखने में एकदम होनशार एवं कई अद्वितीय गुणों से युक्त है।

दसवीं कक्षा में बहुत ही अच्छे नम्बर से पास हुआ ज्ञान्, अब IIIT जैसे उच्च संस्थान में प्रवेश पाना चाहता है। जैसे - तैसे डेर सारी कोविंग और अपनी मेहनत के साहारे ज्ञान्

तोकिन अगर अपने इसी फोड़ संस्थान को बाहरी देशों की नजरों से देखें तो ये बस एक ठीक-ठाक-सा इंजीनियरिंग कॉलेज है जो अपने आप को अन्यों में काना राजा कहता है। निश्चित रूप से यह उनकी नजर का दोष नहीं है, सच्चाई है। IIIT अभी भी इन्फ्रास्ट्रक्चर, छात्रों को मिलने वाली सुविधाओं जैसे कई क्षेत्रों में काफी पीछे हैं।

वैसे सार्वों IIIT के ऊपर देश की सरकार लाखों करोड़ रुपये कर्यों खर्च करती है? निश्चित रूप से इसका एक ही उद्देश्य है कि टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में अभी भी पिछड़े इस देश को अन्य श्रेष्ठ देशों के समकक्ष स्थापित किया जाए। आज की स्थिति में IIIT एक बहुत बड़ा ब्रांड बन बैठा है। इससे सम्बन्धित कोई भी खबर अगर अखबारों या न्यूज चैनलों पर होती है तो सभी लोग पूरी रुचि लेकर इन खबरों को पढ़ते या देखते हैं।

आखिर क्यों आज भी एक हिन्दुस्तानी के मन में IIIT व्यवस्था के प्रति सम्मान की भावना है? क्योंकि आम हिन्दुस्तानी यही सोच



गयी है? हमने अपना नजरिया बहुत सीमित कर लिया है। क्या हमारा उद्देश्य विश्व के दूसरे संस्थानों से भी आगे निकलकर अपना वर्चस्व कायाम करना नहीं होना चाहिए?

यदि एक नजर उन जगहों पर ही डाली जाए जहाँ यह IIIT विकसित किये गये हैं तो इन संस्थानों ने आसपास के इंजीनियरिंग क्षेत्रों में कौन से तीर मार लिये हैं? IIIT Bombay क्या मुमर्झ की chemical industry में कोई कांति लाने में सफल हो पाया? IIIT Kanpur में शान से खड़े इस संस्थान ने अपने आस-पास के ही क्षेत्रों में कौन-तो ऐसी तकनीक विकसित कर ली जिसे गर्व से सराहा जाए? हाँ, इन संस्थानों ने कुछ ऐसे छात्र जरूर बनाए जिन्होंने विश्व में NRI बनकर अपना परचम लहरा दिया और छोड़ दिया ऐसा हिन्दुस्तान जो आज भी उनकी बाट जोह रहा है। अब तो यही पंक्तियाँ शेष हैं।

बहुत - बहुत लिया, दिया बहुत कम।

मर गया देश, और जीवित रह गए तुम।



रहा है कि उसके देश के विकास के उद्देश्य से बने इन संस्थानों के छात्र आज भी अपना कार्य बख्बरी निभा रहे हैं।

वास्तव में क्या यही सच्चाई है या फिर इन छात्रों का एक ही मकालद शेष है- पीस मारना।

सच्चाई तो यही है कि कैम्पस में भौजूद ज्यादातर छात्रों का यही उद्देश्य है कि यहाँ से निकलकर IIIT के ब्रांड को encash करें और बस जिदगी में कभी लोड नहीं हो। उनका मानना है कि हम दूसरे कॉलेजों के छात्रों से ज्यादा योग्यता रखते हैं, इसलिए हम इस "IIITian" सम्मान के हकदार हैं।

पर यहाँ इस बात को स्पष्ट करना उचित होगा कि भले ही यहाँ पर बुद्धिमान और होलोडार छात्रों का प्रतिशत दूसरे Colleges से ज्यादा है, पर क्या इस दंभ में हमारी हालत कूपमंडूक की तरह नहीं हो देते हैं।



- प्रवीन कुमार मिश्रा, हिमांशु अग्रवाल

## आरक्षण ० २२.५% से ४९.५% तक

कुछ पिछड़े वर्गों ने आरक्षण का लाभ उठाकर काफी तरक्की की है, और हर तरह से वे समाज की मुख्यधारा का एक अंग बन चुके हैं। तमिलनाडु में पिछड़ा वर्ग आज निम्न वर्ग से शैक्षिक क्षेत्र में ज्यादा अच्छा प्रदर्शन कर रहा है।

यह पिछड़ा वर्ग (creamy layer) लगभग सारी आरक्षित सीटें अपने नाम कर लेता है, और अत्यंत पिछड़े वर्गों को नहीं के बराबर सीटें मिलती हैं।

### राजनीति एक बाजार :

इसका मतलब यह नहीं कि सरकार ने इन बातों पर ध्यान नहीं दिया। मतलब सिर्फ इतना है कि, इन बातों को नजरअंदाज किया गया। दरअसल राजनीति एक बाजार है जिसके अपने मापदंड हैं। उदाहरण के तौर पर, कोई ऐसा वर्ग जो हमेशा किसी एक पार्टी को ही वोट करे, उसके असंतोष और तकलीफों की अनदेखी नहीं की जा सकती। अवसर ढूँढ़ लिये जाते हैं, और राजनेता दलितों के मसीहा बन जाते हैं। सम्पूर्ण वोट से राजनेताय रुहा। ऐसे में विश्व-विच्छात शिक्षा संस्थानों में आरक्षण एक बहुत लुभावना साधन दिखता है। बैशक यह आरक्षण गैरजरूरी है अगर यह मान लें कि जाति के आधार पर शोषण या भेदभाव पूर्ण तरह लुक चुका है। वैसे सरकार चाहे तो जो सीटें इन संस्थानों में खाली रह जाती हैं, उसे रोका जा सकता है। जैसे विशेष वर्गों के लिए सीटें आरक्षित करने के बजाये सिर्फ उनके प्रवेश मापदंड में छीन दी जा सकती है। इससे सीटें खाली भी नहीं रहेंगी और अलगाव की भावना भी नहीं पनपेगी।

### आरक्षण एक बोझ ?

शिक्षार्थी बहुत हैं। मगर आरक्षण के खिलाफ जो दलीलें दी जाती हैं, वह सही नहीं भी हो सकती। IIIT की बात करें तो जो छात्र आरक्षण से आते हैं उनका प्रदर्शन संतोषजनक नहीं होता। कुछ छात्रों का पदर्शन उत्तम भी होता है। मगर GE category से आने वाले कुछ छात्रों का भी प्रदर्शन काफी बुरा होता है। यह प्रश्न merit का नहीं, लागू और इच्छाशक्ति का है। कुछ

हीनभावना का शिकार हो जाते हैं तो कुछ यह मान लेते हैं कि उन्हें तो नहीं ही निकाला जाएगा। General के छात्र भी जो अपने पसंद के विभाग में नहीं चुने जा सकें, उनमें कुछ की पाई भी रुचि कम हो जाती है। ऐसे कई सारे उदाहरण चारों और नजर आते हैं। जरूरत है इस दिशा में एक सार्थक प्रयास की जाए जिससे उन्हें मुख्यधारा से जोड़ा जा सके। Preparatory courses इस दिशा में अच्छा कदम था, परन्तु वह अपने लक्ष्य को पूरी तरह साधने में तिफ्ल रहा। संभवतः इस कारणवश कि उसमें आरक्षित वर्ग के सभी छात्रों को शामिल नहीं किया गया। इसी तरह जो छात्र पीछे छूट रहे हैं उन्हें मनोवैज्ञानिक सलाह दी जाए।

और ध्यान देने योग्य बात यह है कि आरक्षित वर्गों से कई छात्रों का प्रदर्शन सराहनीय होता है और उनमें से अधिकांश अच्छी पृथक्भूमि से होते हैं, अर्थात् एक पीढ़ी पूर्ण जिन्होंने आरक्षण का लाभ उठाया, उनकी अगली पीढ़ी में यह प्रभावी सिद्ध हो रहा है। अतः हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि आरक्षण नीति सही हो सकती है, भले ही उसे लागू करने का तरीका गलत हो।

### समय की माँग :

चिन्ता की बात यह है कि आरक्षण बढ़ा दिया गया। चिन्ता की बात यह है कि इससे सामाजिक एकता पर बुरा असर पड़ा है। चिन्ता की बात है कि शिक्षा का स्तर गिर सकता है। और चिन्ता की बात यह है कि सरकार के निर्णय जब आज तक उतने प्रभावी सांबित नहीं हुए तो यह कितना प्रभावी होगा।

यहीं पर मीडिया और जनता की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। AIIMS और अन्य संस्थानों के छात्रों की प्रशंसा करनी होगी। उनके निरंतर विरोध के ही कारण सरकार ने GE की सीटें नहीं घटाने का निर्णय लिया। जनता को ऐसी जागरूकता सिर्फ अपने अधिकारों के लिए नहीं बल्कि हर क्षेत्र में दिखानी होगी। जनता, मीडिया और सरकार के बीच ऐसा संतुलन होना चाहिए कि सारे निर्णय सही हों लिये जायें। हम सभी को मिलाकर इस दिशा में प्रयास करने होंगे।

## વિકાર કી કૈદ

શામ કા સમય- મૈં ઔર મેરા મિત્ર બૈઠે ઠણાકે  
લગા રહે થે | તમ્ભી ઉસકે ફોન કી ઘંટી બજતી હૈ | કલાસ  
સે આને કે બાદ મેરા મિત્ર કાફી થક ચુકા થા | ઉસને યહ  
કંઈ હુએ કોંઠ નહીં લી કિ. "યાર ઘર સે ફોન આ રહા હૈ,  
અમ્ભી થક ગયા હું, રાત કો બાત કરુંગા" | તમ્ભી ઘંટી ફિર  
સે બજી, મેરે દોસ્ત ને બાત કી ઔર ખડા કા ખડા રહ  
ગયા | મેરે લાખ કુછ બોલને પર મી ચુપ રહા | મૈને ઉસકે  
last received કોંઠ પર ફોન કિયા | પતા ચલા ઉસકે  
પિતાજી જો બિલ્કુલ સુખથ થે, અબ નહીં રહે | મૈં બેચૈન હો  
ગયા | તમ્ભી ઉસકે LG આકાર ઉસે લે ગયે | ઇસ ઘટના સે  
મૈં બિલ્કુલ સુખથ રહ ગયા | ફિર મૈને સમય કી કઠોરતા  
કો અપને શાબ્દો મેં ઉતાર ડાલા |

એક ઔર જીત આજ તેરી  
એક ખ્વાબ ફિર બનતે બિખરા  
સમય તુ આજ ફિર જીતા |  
ધૂટને ફિર આજ ટેકી-  
એક ઔર જિન્દગી |  
આજ ફિર અરમાનો સો ભરી પેટી  
તુમને લૂટ લી |  
કલ હંસી કે ફલારે થે  
જીવન કે હર ગમ વારે થે |  
ખ્વાબ હમને સજાયે  
અરમાં કુછ હમારે થે |  
બઢાયો થે કદમ, હૌસલા મી થા,  
તુઝસે જીતને કા ફેસલા મી થા |

અકેલા ખડા હું, હારા હુઆ  
ખ્વાબ સારે બિખરે મેરે સામને |  
સમજા ન આઈ થી બાત ઇતની  
કચા કુછ કદમ કા થા સાથ અપના ?  
અગર ઇતને કઠોર હૈ મનુષ્ય,  
અગર ઇતને કઠોર હૈ તેરે ઇચાદે  
તો યે રંગમંચ કર્યો, યે વિવેક કર્યો ?  
યે પ્રાણ કર્યો, યે હૃદય કર્યો ?  
સૌચ યાહ પ્રશ્ન ખો રહા હું  
ઇસ રંગમંચ મેં, ઇસકી માયા મૈં  
સમય સે કમજોર મૈં, કૈદ અપની કાયા મૈં |

દિતેશ શાંકર

### કાલજયી કૃતિયાં

## છિપ છિપ અશ્રુ બહાને વાલો

ગૌપાલદાસ નીરજ

કેવળ જિલ્ડ વદલતી પોથી |  
જૈસે રાત ઉત્તર ચાંદની,



પહને સુવહ ધૂપ કી ધોતી,

## કારવો ગુજર ગયા

ગૌપાલદાસ નીરજ

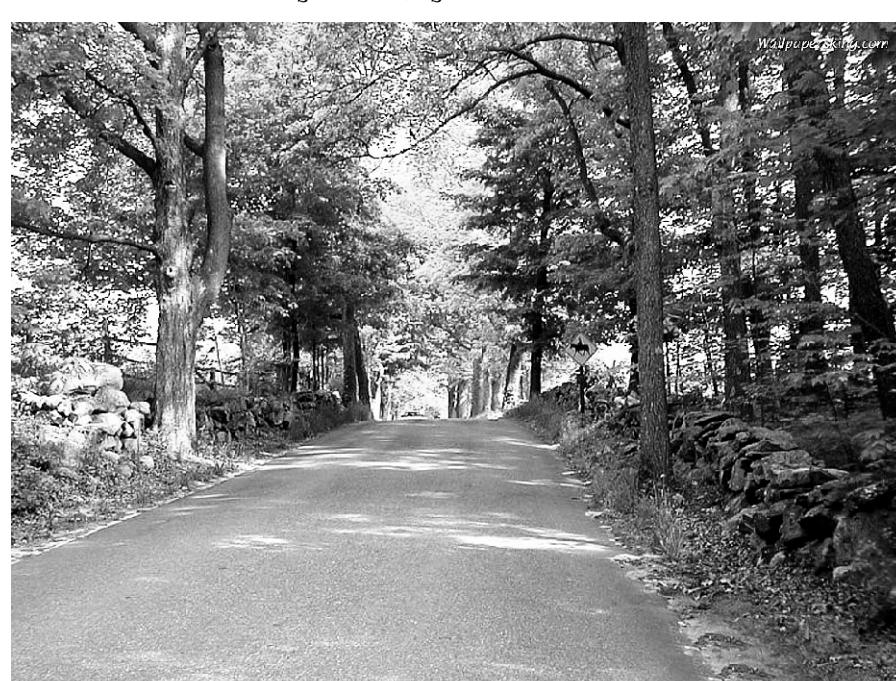
થામ કર જિગર ઉઠ કિ જો મિલા નજર ઉઠા ,  
એક દિન મગર યાહોઁ ,  
એસી કુછ હવા ચલી ,  
લુટ ગયી કલીકલી કિ ઘુટ ગયી ગલીગલી ,  
ઔર હમ લુટેલુટે ,  
વિકચ સે પિટેપિટે ,  
સાંસ કી શારાબ કા ખુમાર દેખતે રહે |  
કારવો ગુજર ગયા , ગુબાર દેખતે રહે |

વસ્ત્ર વદલકર આને વાલો ! ચાલ વદલકર જાને વાલો !  
ચન્દ ખિલૌનોં કે ખોને સે વચ્ચન નહીં મરા કરતા હૈ |

લાખોં વાર ગગરિયાં ફૂર્ણી,  
શિકન ન આઈ પનઘટ પર,  
લાખોં વાર કિશિતિયાં ડૂવ્ણી,  
ચહલપહલ વો હી હૈ તટ પર,  
તમ કી ઉમર વદ્ધાને વાલો ! તૌ કી આયુ ઘટાને વાલો !  
લાખ કરે પતદ્વાર કોશિશ પર ઉપવન નહીં મરા કરતા હૈ |  
લૂટ લિયા માલી ને ઉપવન,  
લુટી ન લેકિન ગન્ધ ફૂલ કી,  
તૂફાનોં તક ને છેડા પર,  
ખિડકી બન્દ ન હુર્દ ધૂલ કી,  
નફરત ગલે લગાને વાલો ! સવ પર ધૂલ ઉડાને વાલો !  
કુછ મુખડોં કી નારાજી સે દર્પન નહીં મરા કરતા હૈ !

સુખન ઝારે ફૂલ સે ,  
મીત ચુમે શૂલ સે ,  
લુટ ગયે સિંગાર સભી બાગ કે બબૂલ સે ;  
ઔર હમ ખદેખડે બહાર દેખતે રહે |  
કારવો ગુજર ગયા, ગુબાર દેખતે રહે !

નીદ મી ખુલી ન થી કિ હાય ધૂપ ઢલ ગયી ,  
પાંચ જબ તલક ઉરે કિ જિન્દગી ફિસલ ગયી ,  
પાતપાત ઝર ગયે કિ શાખશાખ જલ  
ગયી ,  
ચાહ તો નિકલ સકી ન , પર ઉમર  
નિકલ ગયી ,  
મીત અશક બન ગણ ,  
છંદ હો દફન ગણ ,  
સાથ કે સભી દિએ ધૂાઁધૂાઁ પહન  
ગયે ,  
ઔર હમ ઝુકેઝુકે ,  
મોડ પર રૂકેદુકે ,  
ઉઘ કે ચાંદ કા ઉતાર દેખતે રહે |  
કારવો ગુજર ગયા, ગુબાર દેખતે રહે |



હાથ થે મિલે કિ જુલ્ફ ચાંદ કી સંવાર દું ,  
હૌંઠ થે ખુલે કિ હર બહાર કો પુકાર દું ,  
દર્દ થા દિયા ગયા કિ હર દુખી કો પ્યાર દું ,  
ઔર સાંસ યું કિ રંગી ભૂમિ પર ઉતાર દું ,  
હો સકા ન કુછ મગર ,  
શામ બન ગઈ સહર ,  
વહ ઉઠી લહર કિ દહ ગયે કિલે બિખરબિખર ,

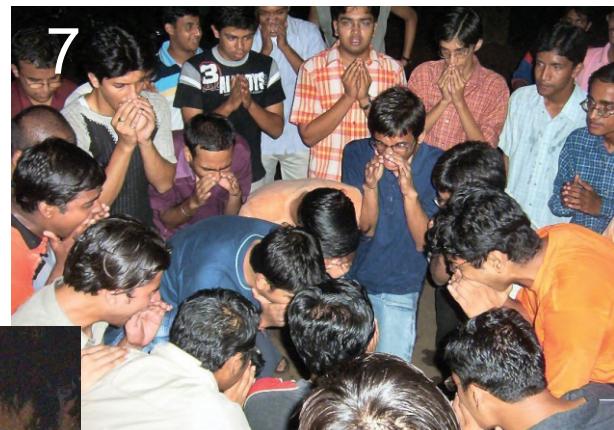
ઔર હમ ડરેડરે ,  
નીર નયન મેં મરે ,  
ઓઢકર કફન , પઢે મજાર દેખતે રહે |  
કારવો ગુજર ગયા , ગુબાર દેખતે રહે !

માંગ મર ચલી કિ એક , જબ નઈની  
કિરન ,  
ઢોલકે ધૂમુક ઉરી , ઠુમુક ઉરે ચરનચરન ,  
શોર મચ ગયા કિ લો ચલી દુલ્હન , ચલી  
દુલ્હન ,  
ગાંઁચ સાબ ઉમડ પડા , બછક ઉરે નયનનયન  
,  
પર તમ્ભી જહર મરી ,  
ગાજ એક વહ ગિરી ,  
પુંછ ગયા સિંદૂર તારતાર હુર્દ ચૂનારી ,  
ઔર હમ અજાનસે ,  
દૂર કે મકાન સે ,  
પાલકી લિયે હુએ કહાર દેખતે રહે |  
કારવો ગુજર ગયા , ગુબાર દેખતે રહે |



2

## केजीपी के सात अजूबे

फूचों की नजर में

7

अपना प्लेयर इन हो, या उनका प्लेयर आउट हार-जीत है बाद में, पहले Tempo-Shout !



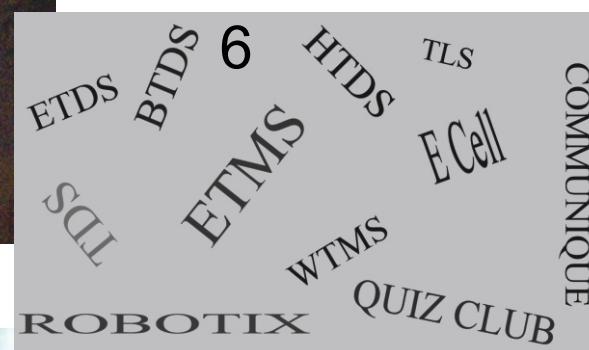
3

1

BIDHAN CHANDRA ROY  
TECHNOLOGY HOSPITAL

हर मर्ज की एक दवा,

थोड़ा सा टालमठोल और एक Calpol



COMMUNIQUE

अब तक ये समझ ना पाए हम,  
Societies हैं ज्यादा या हम हैं कम

ये मोटी मोटी चोटी, ये पानी जैसी दाल,  
ये कंकड़ मिले चावल, ये बावर्ही का बाल,  
जो भी मिलता रुखा सूखा खा ले मेरे लाल।

सुख की घड़ी या दुख की घड़ी  
कब तक बचोगी बेटा आज नहीं तो कल पड़ी।

4



5



जहाँ घटी prof की चौकसी,  
लग गयी दोस्त की proxy



42वें इंटर IIT में KGP की टीम

English Drams : नेहरू की स्वर्ण विजेता नाटिका



NCC कैप 2007 की एक झलक



Technology का दृष्टिकोण

विकास कुमार

